SADQE KA IN-AAM (HINDI)

सदक़ा व ख़ैरात के फ़ज़ाइल पर मब्नी
बयान का तह़रीरी गुलदस्ता

सदक़े का इन्आ़म

- अस्लाफ़ का मा'मूल 4
- सदक़े की मुख़्तलिफ़ सूरतें 15
- चार दिरहमों के बदले चार दुआ़एं 21
- इख़्लास कहां है? 38
- माल एक आज़माइश है 42

पेशकश :-
मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां **ख़राबी** हो या **सफ़ह़ात कम हों** या **बाइन्डिंग** में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी–गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इल्मिय्या**" ने येह रिसाला "**सदक़े का इन्आ़म**" उर्दू ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी–गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (**INDIA**) की **राष्ट्रिय भाषा** "**हिन्दी**" में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब का **हिन्दी रस्मुल ख़त़** करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआ़मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

﴾1﴿ कमो बेश दस(10) मराह़िल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :- (1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्पयूटर तक़ाबुल (4) तक़ाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्पयूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

﴾2﴿ क़रीबुस्सौत़ (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (़) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये **तराजिम चार्ट** का बग़ौर मुत़ालआ़ फ़रमाइयें।

﴾3﴿ हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह़ उर्दू तलफ़्फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में ह़ासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर **अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़्फ़ुज़** के ऐ़न मुताबिक़ ही **हिन्दी-जोडणी** रखी गई है और बत़ौरे ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह़ (ज़बर वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) ह़र्फ़ को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के अक्षर (ह़र्फ़) के नीचे खोड़ा (्) इस्ति'माल किया गया है। मषलन **उ़-लमा** (عُلَمَاء) में "**-ल**" मफ़तूह़ और **रह़्म** (رَحْم) में "**ह़्**" साकिन है।

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

﴾4﴿ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (عْ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : **दा'वत** (دَعْوَت)

﴾5﴿ अ़रबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अ़रबी किताबों के ह़वालाजात भी अ़रबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم" और "رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ" वग़ैरा को भी अ़रबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = عْ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
े = ٔ	ु = ُ	ि = ِ	– = َ	ी = ئ	ू = ؤ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सदक़े का इन्आ़म[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक तुम्हारे नाम मअ़ शनाख़्त (पहचान) मुझ पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मुझ पर अह़सन (या'नी ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ में) दुरूदे पाक पढ़ो।[2]

सदक़े का इन्आ़म

मन्क़ूल है कि एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم मदीना

1 मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रते मौलाना अबू ह़ामिद ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي ने येह बयान सि. 2006 ई. को तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में फ़रमाया। 26 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1434 हि. ब मुत़ाबिक़ 9 जन्वरी सि. 2013 ई. को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है।

(शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी, मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

2 مصنّف عبد الرزاق، ۲/ ۱۴۰، حدیث: ۳۱۱۶

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

के काशानए अक़्दस में पांच अफ़राद थे, मौला मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन, सय्यिदतुन्निसा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا, ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا और आप का एक ग़ुलाम ह़ारिष, सब्रो रिज़ा के पैकर इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के फ़क़्र का आ़लम येह था कि तीन दिन से किसी ने कुछ न खाया था। चुनान्चे, ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मौला मुश्किल कुशा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को अपना एक लिबास दिया ताकि वोह इसे फ़रोख़्त कर के खाने पीने के लिये कुछ ले आएं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लिबास ले कर बाज़ार की त़रफ़ चल दिये और छे दिरहम में उसे फ़रोख़्त कर दिया, वापसी पर किसी ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर मदद का सुवाल किया तो मौला मुश्किल कुशा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अपने रब के भरोसे पर तमाम दिरहम राहे ख़ुदा में दे दिये और ख़ुद सब्रो रज़ा का दामन हाथ में लिये वापसी की राह ली।

भूके रह के ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले

रास्ते में एक शख़्स को ऊंटनी लिये खड़े देखा, जिस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : या अबल ह़सन ! (येह मौला मुश्किल कुशा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की कुन्यत है) ऊंटनी ख़रीदेंगे ? इरशाद फ़रमाया : क्यूं नहीं ! कितने की है ? उस ने अ़र्ज़ की : **100** दिरहम की। फ़रमाया : मेरे पास रक़म नहीं है। बेचने वाला कहने लगा : उधार ख़रीद लीजिये जब रक़म आए तो अदा कर दीजियेगा। फ़रमाया : बहुत ख़ूब ! चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

100 दिरहम उधार में वोह ऊंटनी ख़रीद ली और आगे बढ़े तो कुछ फ़ासिले पर एक और शख़्स मिला जिस ने अ़र्ज़ की : या अबल ह़सन ! ऊंटनी बेचेंगे ? फ़रमाया : क्यूं नहीं ! पूछा : कितने की ख़रीदी ? फ़रमाया : 100 दिरहम की। कहने लगा : 60 नफ़्अ़ ले कर बेच दीजिये। फ़रमाया : बहुत ख़ूब ! चुनान्चे, आप ने वोह ऊंटनी 160 दिरहम में फ़रोख़्त कर दी। आगे बढ़े तो बेचने वाला मिला जिस ने आप को ख़ाली हाथ देख कर पूछा : वोह ऊंटनी कहां गई ? क्या बेच दी ? फ़रमाया : हां ! बेच दी। पूछा कितने में ? बताया : 160 दिरहम में। अ़र्ज़ की : मेरे 100 मुझे लौटा दीजिये। आप ने उस के 100 दिरहम उसे लौटा दिये और बक़िय्या 60 दिरहम जा कर ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को अ़ता फ़रमा दिये, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इतने दिरहम देख कर ह़ैरान हो गईं ! क्यूंकि जो लिबास आप ने दिया था वोह इतना क़ीमती न था कि 60 दिरहम में बिकता, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने पूछा : येह 60 दिरहम कहां से आए ? तो मौला मुश्किल कुशा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने फ़रमाया : मैं ने छे दिरहमों के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ तिजारत की (कि उस की राह में छे दिरहम सदक़ा किये और उस ने मुझे 6 के 60 लौटा दिये) अगले रोज़ मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم सरकारे ज़ी वक़ार, बिइ़ज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते मुबारका में ह़ाज़िर हुवे और अपना सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! क्या तुम जानते हो कि कल का मुआ़मला क्या था ? अ़र्ज़ की : وَاللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ूब जानते हैं) तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! कल जिस ने ऊंटनी बेची वोह मीकाईल (عَلَيْهِ السَّلَام) और जिस ने ऊंटनी ख़रीदी वोह जिब्राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) थे और जो ऊंटनी आप ने ख़रीदी और बेची वोह मेरी बेटी ख़ातूने जन्नत की रोज़े क़ियामत सुवारी होगी ।[1]

अस्लाफ़ का मा'मूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से जहां इमामुल अस्ख़िया, मौला मुश्किल कुशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की सख़ावत और ख़ानदाने नबुव्वत की फ़ज़ीलत का पता चलता है, वहीं रिज़ाए इलाही के हुसूल के लिये सदक़ा व ख़ैरात देने की अहम्मिय्यत भी उजागर होती है। क्यूंकि राहे ख़ुदा में सदक़ा व ख़ैरात करना हमारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़ीम सुन्नत है, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरे जूद से कोई सुवाली ख़ाली न जाता, येही वजह है कि तमाम अस्लाफ़ या'नी बारगाहे नबुव्वत से तर्बिय्यत पाने वाले सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ताबेईन व तबए़ ताबेईन, औलियाए कामिलीन व उ़-लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن भी सदक़ा व

1....क़ल्यूबी, स.33

ख़ैरात के ज़रीए फ़ुक़रा व मसाकीन की मदद कर के इस की बरकात से फ़ैज़याब होते रहे। अल ग़रज़ येह सिलसिला सदियों पर मुहीत़ है और ता क़ियामे क़ियामत जारी रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

सदक़ा व ख़ैरात का षवाब

सदक़ा व ख़ैरात से जहां दौलत मुआ़शरे में गर्दिश करती है वहीं ग़रीबों और मिस्कीनों की बहुत सी ज़रूरतें भी पूरी होती हैं। कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कई मक़ामात पर सदक़ा व ख़ैरात की फ़ज़ीलत और इस के अज्रो षवाब को बयान फ़रमाया है। चुनान्चे, पारह **3** सूरए बक़रह की आयत नम्बर **261** में इरशाद होता है :

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾ (پ۳، البقرۃ: ۲۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन की कहावत जो अपने माल* **अल्लाह** *की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने ऊगाईं सात बालें हर बाल में सो दाने और* **अल्लाह** *इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और* **अल्लाह** *वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।*

राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मुराद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रिज़ा के साथ इन्आ़म भी अ़त़ा

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

फ़रमाता है। मगर सुवाल येह है कि राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मुराद क्या है ? तो जान लीजिये कि इल्मे दीन की इशाअ़त में हिस्सा लेना, दीनी मदारिस की मदद करना, मसाजिद बनाना, दीनी कुतुब के लिये लाइब्रेरी बनाना, मुसाफ़िर ख़ाने बनाना, ज़रूरत मन्द पड़ोसियों और रिश्तेदारों की मदद करना, मोहताजों, अपाहजों और ग़रीबों के इलाज मुआ़लजा और मक़रूज़ों के क़र्ज़ की अदाएगी के लिये ख़र्च करना वग़ैरा ऐसे काम हैं कि इन में से जिस काम में भी ख़र्च करेंगे वोह राहे ख़ुदा में ख़र्च करना ही कहलाएगा। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम ख़ाज़िन अबुल हसन अ़लाउद्दीन अ़ली बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 741 हि.) मज़कूरा आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : राहे ख़ुदा में ख़र्च करना ख़्वाह वाजिब हो या नफ़्ल, तमाम अब्वाबे ख़ैर को आ़म है।[1]

और सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नज़दीक किसी त़ालिबे इल्म को किताब ख़रीद कर दी जाए या कोई शिफ़ाख़ाना बना दिया जाए या मुर्दों के ईसाले षवाब के लिये तीजा, दस्वें, बीस्वें, चालीसवें के त़रीक़े पर मसाकीन को खाना खिलाया जाए, सब राहे ख़ुदा में ख़र्च करना ही है।

षवाब में कमी-बेशी

जब कोई शख़्स राहे ख़ुदा में अपना माल ख़र्च करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के इवज़ सात सो गुना या इस से भी

مدینہ

1 تفسیر خازن، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۱، ۱/ ۲۰۵

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

ज़ियादा अज्रो षवाब अ़ता फ़रमाता है जैसा कि सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى मज़कूरा आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : एक दाने के **700** दाने हो गए इसी त़रह़ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से **700** गुना अज्र हो जाता है ।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जब येह यक़ीन हो कि राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से एक के बदले **700** मिलेंगे तो कोई नादान शख़्स ही अपना सरमाया इस सौदे में नहीं लगाएगा । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी राह में ख़र्च करने वालों को यूंही दिया करता है, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शम्सुद्दीन क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ानों को तक़्सीम फ़रमाने वाले हमारे आक़ा दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : رَبِّ زِدْ اُمَّتِى या'नी ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मत को इस से भी ज़ियादा अज्रो षवाब अ़ता फ़रमा तो बारगाहे ख़ुदावन्दी से येह मुज़्दा मिला :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةً ؕ (پ۲، البقرة: ۲۴۵)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : है कोई जो **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दे तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे ।*

[1] خزائن العرفان، پ۳، البقرة، تحت الآیة: ۲۶۱

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह मुज्दा पाने के बा वुजूद अपनी उम्मत की दस्तगीरी फ़रमाते हुवे मज़ीद करम नवाज़ी के लिये अ़र्ज़ की : رَبِّ زِدْ اُمَّتِیْ या'नी ऐ मेरे रब ! मेरी उम्मत को इस से भी ज़ियादा अज्रो षवाब अ़ता फ़रमा तो इरशाद हुवा :

اِنَّمَا یُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾ (پ۲۳، الزمر: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : साबिरों ही को उन का षवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती । (1)

षवाब में फ़र्क़

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان तफ़्सीरे नईमी में फ़रमाते हैं : सदक़ात के षवाब में ज़ियादती-कमी चन्द वजह से होती है । इख़्लास का फ़र्क़, ज़मान का फ़र्क़, फ़क़ीर का फ़र्क़, मक़ामे ख़ैरात का फ़र्क़,

जिस क़दर इख़्लास ज़ियादा उसी क़दर षवाब ज़ियादा ।

- (इख़्लास के फ़र्क़ की मिषाल) सह़ाबए किराम के सवा सैर जव हमारे पहाड़ भर सोने की ख़ैरात से क्यूं अफ़्ज़ल हैं, इस लिये कि इन का सा इख़्लास हम को कैसे मयस्सर हो ?
- (ज़माने के फ़र्क़ की मिषाल) माहे रमज़ान, जुमुआ़, शबे क़द्र के सदक़े का बहुत षवाब है, दूसरे ज़माने के सदक़ात का वोह षवाब नहीं ।

مدینہ

1 تفسیر قرطبی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۱، ۲/ ۲۲۹

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

❀➢ (मक़ाम के फ़र्क़ की मिषाल) मक्कए मुअ़ज़्ज़मा, मदीनए मुनव्वरा के सदक़ात का षवाब एक का एक लाख पच्चीस हज़ार और ज़मीन में येह नहीं (या'नी किसी दूसरे मक़ाम पर येह षवाब नहीं)।

❀➢ (फ़क़ीर के फ़र्क़ की मिषाल) आ़लिम फ़क़ीर और ज़ियादा ह़ाजत मन्द पर सदक़ा दूसरों पर सदक़े से ज़ियादा षवाब का बाइ़ष है जैसे दाने की पैदावार ज़मीन व ज़मान के फ़र्क़ से मुख़्तलिफ़ होती है ग़रज़ येह कि وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ بिल्कुल ह़क़ व दुरुस्त है, सदक़ए मक़्बूल की तौफ़ीक़ भी वोही देता है।

सदक़े का येह षवाब जो बयान हुवा इस के मिलने की जगह आख़िरत है अगर दुन्या में रब तआ़ला सख़ी को कुछ बरकत दे दे तो उस का करम है मगर येह बदला नहीं, बदला तो क़ियामत में मिलेगा। लिहाज़ा कोई शख़्स आज ख़ैरात दे कर कल ही **700** का मुत़ालबा न करे। खेत बोने का वक़्त और हे और काटने का और।[1]

ह़ज़रते अ़ल्लामा नासिरुद्दीन अबू सईद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बिन मुह़म्मद शीराज़ी बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा **685** हि.) وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस शख़्स के लिये चाहता है अज्रो षवाब बढ़ा देता है) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मुराद येह है कि वोह अपनी राह में ख़र्च करने

1 تفسیرِ نعیمی، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۱، ۳/ ۸۶

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

वाले की ह़ालत के मुत़ाबिक़ उस को अपने फ़ज़्लो करम से नवाज़ता है या'नी येह मुलाह़ज़ा फ़रमाता है कि उस की राह में ख़र्च करने वाला किस क़दर मुख़्लिस और कोशिश करने वाला है ? येही वजह है कि आ'माल षवाब की मिक़्दार के मुआ़मला में मुख़्तलिफ़ होते हैं ।[1]

मिक़्दार में कम, दरजे में ज़ियादा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले की ह़ालत के ए'तिबार से षवाब में फ़र्क़ को इस मिषाल से ब आसानी समझा जा सकता है : तीन शख़्स हों मगर तीनों की ह़ालत मुख़्तलिफ़ हो, एक इन्तिहाई मालदार हो, दूसरे के पास इस क़दर माल हो कि अपनी ज़रूरियाते ज़िन्दगी पूरा करने में किसी का मोह़ताज न हो जब कि तीसरे शख़्स के पास सिर्फ़ दो रोटियां हों । अब अगर कोई फ़क़ीर इन तीनों अश्ख़ास के पास बारी बारी जा कर कुछ खाने के लिये मांगे और इन में से हर एक उसे दो दो रोटियां दे तो बेशक हर एक ने बज़ाहिर यक्सां नेक काम किया मगर इन तीनों की ह़ालत के ए'तिबार से इन की नेकियों में ह़क़ीक़तन फ़र्क़ है, क्यूंकि जिस शख़्स के पास सिर्फ़ दो ही रोटियां थीं उस का येह दोनों रोटियां फ़क़ीर को दे देना ऐसा है जैसे मालदार शख़्स अपनी सारी दौलत उस फ़क़ीर को दे देता । लिहाज़ा येह हो सकता है कि मालदार शख़्स को इस नेकी का अज्र दस गुना मिले, मुतवस्सित़ आमदनी वाले को **700** गुना और जिस के पास थीं ही दो रोटियां उस को बे ह़िसाब अज्र मिले । चुनान्चे,

[1] تفسیر بیضاوی، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۱، ۱/ ۵۶۵

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि (ग़ज़वए तबूक के मौक़अ़ पर) सरकारे ज़ी वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें सदक़ा करने का हुक्म दिया, इत्तिफ़ाक़न उस वक़्त मेरे पास माल बहुत था, मैं ने सोचा कि अगर मैं किसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बढ़ सकता हूं तो वोह आज का दिन है।[1] आप फ़रमाते हैं कि मैं अपना आधा माल ले कर बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िर हुवा तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : مَا اَبْقَیْتَ لِاَھْلِكَ؟ तुम ने अपने बाल बच्चों के लिये क्या छोड़ा ? मैं ने अ़र्ज़ की : इतना ही । (या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आधा माल ह़ाज़िरे ख़िदमत है और आधा माल अहलो इ़याल के लिये छोड़ दिया है) इतने में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी अपना माल ले आए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से भी पूछा : یَااَبَا بَکْرٍ مَا اَبْقَیْتَ لِاَھْلِكَ؟ ऐ अबू बक्र ! तुम ने अपने घर वालों के लिये क्या छोड़ा ? तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : اَبْقَیْتُ لَھُمُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہ या'नी मैं उन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़

---

[1] ....मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उ़मर का गुमान येह था कि सदक़े में सबक़त ज़ियादतिये माल से होती है और माल तो मेरे पास ज़ियादा है, लिहाज़ा मैं ही आज बढ़ जाऊंगा, मगर बा'द में पता लगा कि सदक़े में सबक़त इख़्लास की ज़ियादती से होती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/355)

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

आया हूं।[1] अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि उस वक़्त मुझे यक़ीन हो गया : وَاللّٰہِ لَا اَسْبِقُہٗ اِلٰی شَیْءٍ اَبَدًا ख़ुदा की क़सम ! मैं कभी किसी चीज़ में इन से आगे नहीं बढ़ सकता।[2] अशिअ़तुल लमआ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कुल माल जनाबे सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आधे माल से मिक़्दार में अगर्चे बहुत कम था मगर दरजे में बहुत ज़ियादा था।[3]

मदीना

1....क़िब्ला मुफ़्ती साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़दीषे पाक के इस ह़िस्से की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : सारे माल की ख़ैरात ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर की ख़ुसूसिय्यत है इन की और इन के बाल बच्चों की त़रह़ मुतवक्किल न कोई होगा न सारा माल ख़ैरात करेगा। हम जैसों को बा'ज़ माल ख़ैरात करने का हुक्म है : وَاَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अल्लाह की राह में हमारे दिये में से ख़र्च करो। (پ۲۸،المنافقون:۱۰)) مِمَّا में مِنْ बा'ज़िय्यत का है, अगर हम सारा माल ख़ैरात कर दें तो अगर्चे हम सब्र कर जावें मगर हमारे बीवी बच्चे पीट पीट कर मर जावें। ख़याल रहे कि आ़बिदों की नमाज़ व ज़कात और है, आ़शिक़ों की और नोईय्यत की, आ़रिफ़ो की और त़रह़ की। आ़बिदों की ज़कात साल के बा'द चालीसवां ह़िस्सा। आ़शिक़ों की ज़कात इशारा पा कर सारा माल। आ़बिदों की नमाज़ मस्जिदों की दीवारों के साए में आ़शिक़ों की नमाज़ तल्वारों के साए में इस जवाब से मा'लूम हुवा अल्लाह रसूल के नाम पर ख़ैरात, अल्लाह रसूल पर तवक्कुल शिर्क नहीं ऐन ईमान है।

(मिरआतुल मनाजीह, 7/355)

2 ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر وعمر، ۵/ ۳۸۰، حدیث: ۳۶۹۵

3 اشعۃ اللمعات، ۴/ ۶۵۱

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

क्या सदक़े से माल में कमी होती है ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से माल बढ़ता है घटता नहीं जैसा कि ह़दीष शरीफ़ में है : مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِّنْ مَّالٍ या'नी सदक़ा माल में कमी नहीं करता ।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : ज़कात देने वाले की ज़कात हर साल बढ़ती ही रहती है, तजरिबा है कि जो किसान खेत में बीज फेंक आता है वोह बज़ाहिर बोरियां ख़ाली कर लेता है लेकिन ह़क़ीक़त में मअ़ इज़ाफ़े के भर लेता है, घर की बोरियां चूहे, सुरसूरी वग़ैरा की आफ़ात से हलाक हो जाती हैं या येह मत़लब है कि जिस माल में से सदक़ा निकलता रहे उस में से ख़र्च करते रहो, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बढ़ता ही रहेगा, कुंवें का पानी भरे जाओ तो बढ़े ही जाएगा ।[2]

मा'लूम हुवा ! राहे ख़ुदा में दी जाने वाली चीज़ हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं होती, आख़िरत में अज्रो षवाब की ह़क़दारी तो है ही, बाज़ अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ उस का ने'मुल बदल अ़त़ा किया जाता है । चुनान्चे,

---

1 مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب استحباب العفو والتواضع، ص۱۳۹۷، حدیث: ۶۹ / ۲۵۸۸

2 مرآۃ المناجیح، ۳/۹۳

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی रौज़ुर्रियाहीन में येह हिकायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रते सय्यिदुना हबीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی के दरवाज़े पर किसी साइल ने सदा लगाई । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ज़ौजए मोह़तरमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا गुंधा हुवा आटा रख कर पड़ोस से आग लेने गई थीं ताकि रोटी पकाएं । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने वोही आटा उठा कर साइल को दे दिया । जब वोह आग ले कर आईं तो आटा नदारद (या'नी ग़ाइब) । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : उसे रोटी पकाने के लिये ले गए हैं । बहुत पूछने पर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ख़ैरात कर देने का वाक़िआ़ बताया तो वोह बोलीं : سُبْحٰنَ اللّٰہ येह तो बहुत अच्छी बात है मगर हमें भी तो कुछ खाने के लिये दरकार है । इतने में एक शख़्स एक बड़ी लगन में भर कर गोश्त और रोटी ले आया तो आप बोलें : देखिये, आप को किस क़दर जल्द लौटा दिया गया गोया रोटी भी पका दी और गोश्त का सालन मज़ीद भेज दिया ![1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बेह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सदक़ा किसे कहते हैं ?

लुग़त में **सदक़ा** इस अ़त़िय्ये को कहते हैं :

يُرَادُ بِهَا الْمَثُوبَةُ لَا الْمَكْرُمَةُ (المنجد) जिस से इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई के बजाए षवाब

---

[1] روض الریاحین، ص ۲۷۶

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

का इरादा किया जाए। अ़ल्लामा सय्यिद शरीफ़ जुरजानी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی ने सदक़े की ता'रीफ़ कुछ यूं बयान की : هِیَ الْعَطِیَّةُ تُبْتَغٰی بِهَا الْمَثُوْبَةُ مِنَ اللهِ تَعَالٰی सदक़ा वोह अ़त़िय्या है जिस के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से षवाब की उम्मीद रखी जाती है।[1]

सदक़े की मुख़्तलिफ़ सूरतें

प्यारे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में ख़र्च करना ही सदक़ा नहीं बल्कि तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक ह़दीषे पाक में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सदक़े की मुख़्तलिफ़ सूरतें बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

- تَبَسُّمُكَ فِیْ وَجْهِ اَخِیْكَ لَكَ صَدَقَةٌ या'नी तुम्हारा अपने भाई के लिये मुस्कुराना भी **सदक़ा** है।
- وَاَمْرُكَ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیُكَ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ या'नी नेकी की दा'वत देना और बुराई से रोकना भी **सदक़ा** है।
- وَاِرْشَادُكَ الرَّجُلَ فِیْ اَرْضِ الضَّلَالِ لَكَ صَدَقَةٌ या'नी भटके हुवे की रहनुमाई करना भी **सदक़ा** है।

---

1 کتاب التعریفات، باب الصاد، ص۹۵

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

* وَبَصَرُكَ لِلرَّجُلِ الرَّدِیْءِ الْبَصَرِ لَكَ صَدَقَةٌ या'नी कमज़ोर निगाह वाले की मदद करना भी **सदक़ा** है।
* وَاِمَاطَتُكَ الْحَجَرَ وَالشَّوْكَ وَالْعَظْمَ عَنِ الطَّرِيْقِ لَكَ صَدَقَةٌ या'नी रास्ते से पथ्थर, कांटा और हड्डी का हटा देना भी सदक़ा है
* وَاِفْرَاغُكَ مِنْ دَلْوِكَ فِيْ دَلْوِ اَخِيْكَ لَكَ صَدَقَةٌ या'नी अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना भी सदक़ा है।(1)

नीज़ मज़कूरा आ'माल के इलावा किसी को क़र्ज़ देना भी सदक़ा है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

كُلُّ قَرْضٍ صَدَقَةٌ या'नी हर क़र्ज़ सदक़ा है।(2)

हुरूफ़े सदक़ा के 4 मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल हक़्क़ी हनफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1137 हि.) तफ़्सीरे रूहुल बयान में फ़रमाते हैं कि सदक़े के चार हुरूफ़ से 4 मदनी फूल हासिल होते हैं :

---

1. ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ما جاء فی صنائع المعروف، ۳/۳۸۴، حدیث: ۱۹۶۳
2. شعب الایمان، باب فی الزکاة، فصل فی القرض، ۳/۲۸۴، حدیث: ۳۵۶۳

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

❀ صَ से मुराद "اَلصَّد" (रोकना) है या'नी सदक़ा दुन्या व आख़िरत की हर नापसन्दीदा शै को सदक़ा करने वाले (तक पहुंचने) से रोक देता है।

❀ دَ से मुराद "اَلدَّلِیل" (राहनुमाई करना) है या'नी सदक़ा, सदक़ा करने वाले की जन्नत की त़रफ़ राहनुमाई करता है।

❀ قَ से मुराद "اَلْقُرْب" (क़रीब होना) है या'नी सदक़ा, सदक़ा करने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब कर देता है।

❀ هَ से मुराद "اَلْهِدَایَة" (रहनुमाई व रहबरी) है या'नी सदक़ा करने से सदक़ा करने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हिदायत ह़ासिल होती है।[1]

"बरकते सदक़ात" के नव हुरूफ़ की निस्बत से सदक़ा व ख़ैरात के फ़ज़ाइल पर मब्नी 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

① ⇦ اَلصَّدَقَةُ تَسُدُّ سَبْعِيْنَ بَابًا مِّنَ السُّوْءِ सदक़ा बुराई के 70 दरवाज़े बन्द करता है।[2]

② ⇦ كُلُّ امْرِئٍ فِيْ ظِلِّ صَدَقَتِهٖ حَتّٰى يُقْضٰى بَيْنَ النَّاسِ हर शख़्स (बरोज़े क़ियामत) अपने सदक़े के साए में होगा यहां तक कि

---

1 روح البیان، البقرة، تحت الآیة: ۲۶۵، ۱/ ۴۲۶

2 المعجم الکبیر، ۴/ ۲۷۴، حدیث: ۴۴۰۲

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

लोगों के दरमियान फ़ैसला फ़रमा दिया जाए ।[1]

③ ⇨ اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ عَنْ اَهْلِهَا حَرَّ الْقُبُوْرِ وَاِنَّمَا يَسْتَظِلُّ الْمُؤْمِنُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيْ ظِلِّ صَدَقَتِهٖ

बेशक सदक़ा करने वालों को सदक़ा क़ब्र की गर्मी से बचाता है और बिलाशुबा मुसलमान क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साए में होगा ।[2]

④ ⇨ اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ وَتَدْفَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ बेशक सदक़ा रब के ग़ज़ब को बुझाता और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है ।[3]

⑤ ⇨ بَاكِرُوْا بِالصَّدَقَةِ فَاِنَّ الْبَلَآءَ لَا يَتَخَطَّى الصَّدَقَةَ सुब्ह सवेरे सदक़ा दो कि बला सदक़े से आगे क़दम नहीं बढ़ाती ।[4]

⑥ ⇨ اِنَّ صَدَقَةَ الْمُسْلِمِ تَزِيْدُ فِي الْعُمْرِ وَتَمْنَعُ مِيْتَةَ السُّوْءِ وَيُذْهِبُ اللهُ الْكِبْرَ وَالْفَخْرَ

बेशक मुसलमान का सदक़ा उ़म्र बढ़ाता और बुरी मौत को रोकता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से सदक़ा देने वाले से तकब्बुर व तफ़ाख़ुर (बड़ाई और फ़ख़्र करने की बुरी आ़दत) दूर कर देता है ।[5]

مدینہ

1 المعجم الکبیر، ۱۷/ ۲۸۰، حدیث: ۷۷۱

2 شُعَبُ الایمان، باب الزکاۃ، التحریض علی صدقۃ التطوع، ۳/۲۱۲، حدیث: ۳۳۴۷

3 ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ما جاء فی فضل الصدقۃ، ۲/ ۱۴۶، حدیث: ۶۶۴

4 شُعَبُ الایمان، باب فی الزکاۃ، التحریض علی صدقۃ التطوع، ۳/۲۱۴، حدیث: ۳۳۵۳

5 المعجم الکبیر، ۱۷/۲۲، حدیث: ۳۱

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

⑦ ⇨ اِنَّهَا حِجَابٌ مِّنَ النَّارِ لِمَنِ احْتَسَبَهَا يَبْتَغِيْ بِهَا وَجْهَ اللّٰهِ जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर सदक़ा करे तो वोह (सदक़ा) उस के और आग के दरमियान पर्दा बन जाता है।[1]

⑧ ⇨ اِسْتَتِرُوْا مِنَ النَّارِ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ فَاِنَّهَا تَسُدُّ مِنَ الْجَائِعِ مَسَدَّهَا مِنَ الشَّبْعَانِ आग से बचो अगर्चे खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए, येह भूके के लिये सैरी के बराबर है।[2]

⑨ ⇨ اَلصَّلَاةُ بُرْهَانٌ وَّالصَّوْمُ جُنَّةٌ وَّالصَّدَقَةُ تُطْفِئُ الْخَطِيْئَةَ كَمَا يُطْفِئُ الْمَاءُ النَّارَ नमाज़ (ईमान की) दलील है और रोज़ा (गुनाहों से) ढाल है और सदक़ा ख़ताओं को यूं मिटा देता है जैसे पानी आग को।[3]

जन्नत में घर की ज़मानत

एक शख़्स ख़ुरासान से बसरा आया और उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي के पास 10 हज़ार दिरहम बत़ौरे अमानत रखे और अ़र्ज़ की, कि आप उस के लिये बसरा में एक घर ख़रीदें ताकि जब वोह मक्कए मुकर्रमा से लौटे तो उस घर में रहे। इसी दौरान लोगों को आटे की मेहंगाई का सामना

مدینہ

1 مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، ۳/ ۲۸۶، حدیث: ۴۶۱۷

2 مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنہا، ۹/ ۳۵۹، حدیث: ۲۴۵۵۵

3 ترمذی، ابواب السفر، باب ماذُکِر فی فضل الصلاۃ، ۲/ ۱۱۸، حدیث: ۶۱۴

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

करना पड़ा तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने उन दिरहमों से आटा ख़रीद कर सदक़ा कर दिया, उन से कहा गया कि उस शख़्स ने तो आप से घर ख़रीदने के लिये कहा था ! फ़रमाया : मैं ने उस के लिये जन्नत में घर ले लिया है ! अगर वोह इस पर राज़ी होगा तो ठीक, वरना मैं उसे 10 हज़ार दिरहम वापस दे दूंगा । फिर जब वोह लौटा तो पूछा : ऐ अबू मुह़म्मद ! क्या आप ने घर ख़रीद लिया ? जवाब दिया : हां ! मह़ल्लात, नह्रों और दरख़्तों के साथ । वोह शख़्स बहुत ख़ुश हुवा फिर कहने लगा : मैं उस में रहना चाहता हूं । आप ने फ़रमाया : मैं ने वोह घर अल्लाह तआ़ला से जन्नत में ख़रीदा है ! येह सुन कर उस शख़्स की ख़ुशी मज़ीद बढ़ गई, उस की बीवी बोली : इन से कहो कि अपनी ज़मानत की एक दस्तावेज़ लिख दें तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی ने लिखा : بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **जो घर ह़बीब अ़जमी ने मह़ल्लात, नह्रों और दरख़्तों समेत दस हज़ार दिरहम में अल्लाह तआ़ला से फ़ुलां बिन फ़ुलां के लिये जन्नत में ख़रीदा है येह उस की दस्तावेज़ है । अब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह ह़बीब अ़जमी की ज़मान को पूरा फ़रमा दे ।"** कुछ अ़र्से बा'द उस शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया । उस ने येह वसिय्यत की थी कि मेरे कफ़न में येह रुक़्आ़ डाल देना । (तदफ़ीन के बा'द) जब सुब्ह़ हुई तो लोगों ने देखा कि उस शख़्स की क़ब्र पर एक रुक़्आ़ है जिस में लिखा था कि येह ह़बीब अ़जमी के लिये उस मकान

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

से बराअत नामा है जो उन्हों ने फ़ुलां शख़्स के लिये ख़रीदा था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस शख़्स को वोह मकान अ़ता फ़रमा दिया। उस मक्तूब को ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ले लिया और बहुत रोए और फ़रमाया : येह **अल्लाह** तआ़ला की जानिब से मेरे लिये बराअत नामा है।(1)

4 दिरहमों के बदले चार दुआ़एं

ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار एक रोज़ वा'ज़ फ़रमा रहे थे, किसी ह़क़दार ने 4 दिरहम का सुवाल किया तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ए'लान फ़रमाया : जो इस को 4 दिरहम देगा मैं उस के लिये 4 दुआ़एं करूंगा। उस वक़्त वहां से एक ग़ुलाम गुज़र रहा था जिस के क़दम आप की रह़मत भरी आवाज़ सुन कर थम गए, उस के पास 4 दिरहम थे जो उस ने साइल को पेश कर दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر ने फ़रमाया : बताओ कौन कौन सी चार दुआ़एं करवाना चाहते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : (1) मैं ग़ुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं (2) मुझे इन दराहिम का बदला मिल जाए (3) मुझे और मेरे आक़ा को तौबा नसीब हो (4) मेरी, मेरे आक़ा की, आप की और तमाम ह़ाज़िरीन की बख़्शिश हो जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने हाथ उठा कर दुआ़ फ़रमा दी। ग़ुलाम अपने आक़ा के पास देर से पहुंचा तो आक़ा ने सबबे ताख़ीर दरयाफ़्त किया, उस ने वाक़िआ़ कह सुनाया। आक़ा ने

मदينه

(1) نزھۃ المجالس، باب فی فضل الصدقۃ...الخ، ۲/۲

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पूछा : पहली दुआ़ कौन सी थी ? गुलाम बोला : मैं ने अ़र्ज़ की : "दुआ़ कीजिये मैं गुलामी से आज़ाद कर दिया जाऊं।" येह सुन कर आक़ा की ज़बान से बे साख़्ता निकला : जा तू गुलामी से आज़ाद है। पूछा : दूसरी दुआ़ कौन सी करवाई ? कहा : "जो चार दिरहम मैं ने दे दिये हैं इस का ने'मुल बदल मिल जाए।" आक़ा बोला : मैं ने तुझे चार दिरहम के बदले **4** हज़ार दिरहम दिये। पूछा : तीसरी दुआ़ क्या थी ? बोला : "मुझे और मेरे आक़ा को गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए।" येह सुनते ही आक़ा की ज़बान पर इस्तिग़फ़ार जारी हो गया और कहने लगा मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूं। चौथी दुआ़ भी बता दो ? कहा : "मैं ने इल्तिजा की, कि मेरी, मेरे आक़ा की, आप जनाब की और तमाम ह़ाज़िरीने इजतिमाअ़ की मग़फ़िरत हो जाए।" येह सुन कर आक़ा ने कहा : "तीन बातें जो मेरे इख़्तियार में थीं वोह कर ली हैं चौथी सब की मग़फ़िरत वाली बात मेरे इख़्तियार से बाहर है।" उसी रात आक़ा ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को सुना : जो तुम्हारे इख़्तियार में था वोह तुम ने कर दिया और तुम्हारा क्या ख़याल है कि जो मेरे इख़्तियार में है मैं वोह नहीं करूंगा ? मैं अरह़मुर्राह़िमीन हूं, जाओ ! मैं ने तुम्हें, तुम्हारे ग़ुलाम को, मन्सूर को और तमाम ह़ाज़िरीन को बख़्श दिया।[1]

---

1 روض الریاحین، ص۱۹۹

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

इन्सान की हलाकत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने राहे ख़ुदा में माल लुटाने से कैसी कैसी बरकतें ह़ासिल होती हैं मगर अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! जो लोग बुख़्ल से काम लेते हुवे राहे ख़ुदा में माल लुटाने के बजाए जम्अ़ करने में लगे रहते हैं उन के कषीर माल जम्अ़ करने की ह़िर्स उन्हें सरकश और यादे ख़ुदावन्दी से ग़ाफ़िल कर देती है और वोह अपने बुख़्ल की वजह से रिज़ाए रब्बुल अनाम से भी मह़रूम रहते हैं । चुनान्चे,

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ یَّبْخَلُۚ وَ مَنْ یَّبْخَلْ فَاِنَّمَا یَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖؕ وَ اللّٰهُ الْغَنِیُّ وَ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا یَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَیْرَكُمْۙ ثُمَّ لَا یَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ(۳۸) (پ۲۶، محمد:۳۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां हां येह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि* ***अल्लाह*** *की राह में ख़र्च करो तो तुम में कोई बुख़्ल करता है और जो बुख़्ल करे वोह अपनी ही जान पर बुख़्ल करता है और* ***अल्लाह*** *बे नियाज़ है और तुम सब मोह़ताज और अगर तुम मुंह फेरो तो वोह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वोह तुम जैसे न होंगे ।*

मा'लूम हुवा ! हमारा राहे ख़ुदा में ख़र्च करना अपने फ़ाइदे के लिये है कि इस से न सिर्फ़ अज्रो षवाब मिलता है बल्कि आख़िरत भी संवरती है, लिहाज़ा जो लोग माल जम्अ़ करने की ह़िर्स में मुब्तला रहते हैं उन्हें याद रखना चाहिये कि येह सब मालो मताअ़ यहीं रह जाएगा और उन्हें एक दिन सब कुछ छोड़ कर क़ब्र में जाना है । चुनान्चे,

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ (پ۳۰، التکاثر: ۱،۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (मुतवफ़्फ़ा 741 हि.) तफ़्सीरे ख़ाज़िन में मज़्कूरा आयते मुबारका कि तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : कषरते माल की ह़िर्स और इस पर मुफ़ाख़रत मज़्मूम (या'नी फ़ख़्र करना बुरा) है और इस में मुब्तला हो कर आदमी सआ़दते उख़्विय्या से महरूम हो जाता है।[1]

माली इबादत की क़बूलिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़कात और सदक़ा व ख़ैरात का शुमार माली इबादत में होता है और इस इबादत की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मालदारों को दी है ताकि ग़रीब व मिस्कीन लोगों की ह़ाजात पूरी होने के साथ साथ दौलत किसी एक जगह जम्अ़ न हो बल्कि पूरे मुआ़शरे में गर्दिश करती रहे। नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दौलत को ग़रीबों और मिस्कीनों पर ख़र्च करने को अपनी रिज़ा का ज़रीआ़ भी क़रार दिया है, लिहाज़ा अगर कोई शख़्स किसी ग़रीब व मिस्कीन शख़्स की माली मदद करे तो ख़ुद को उस का मोह़सिन और उस शख़्स को

[1] تفسیر خازن، پ۳۰، التکاثر، ۴/ ۴۰۴

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

जिस की इस ने मदद की है ह़क़ीर तसव्वुर न करे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी राह में ख़र्च करने वालों के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया है :

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۲۶۲﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ مَغْفِرَةٌ خَیْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ یَّتْبَعُهَاۤ اَذًى ؕ وَ اللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ﴿۲۶۳﴾

(پ۳، البقرۃ: ۲۶۲، ۲۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जो अपने माल* **अल्लाह** *की राह में ख़र्च करते हैं फिर दिये पीछे (या'नी देने के बा'द) न एह़सान रखें न तक्लीफ़ दें उन का नेग (अज्रो षवाब) उन के रब के पास है और उन्हें न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म। अच्छी बात कहना और दर गुज़र करना उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द सताना हो और* **अल्लाह** *बे परवा ह़िल्म वाला है।*

इमाम ख़ाज़िन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं कि एह़सान रखने से मुराद किसी को कुछ देने के बा'द दूसरों के सामने येह इज़्हार करना है कि मैं ने इतना कुछ तुझे दिया और तेरे साथ ऐसे ऐसे सुलूक किये। पस इस त़रह़ किसी को मुकद्दर (या'नी रन्जीदा व ग़मगीन) करना एह़सान जताना कहलाता है और किसी को तक्लीफ़ देने से मुराद उस को आ़र दिलाना है मषलन येह कहा जाए कि तू नादार था, मुफ़्लिस था, मजबूर था, निकम्मा था वग़ैरा मैं ने तेरी ख़बर गीरी की।

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाते हैं : अगर साइल को कुछ न दिया जाए तो उस से अच्छी बात कहना और ख़ुश ख़ुल्क़ी के साथ ऐसा जवाब देना जो उस को नागवार न गुज़रे और अगर वोह सुवाल में इसरार करे या ज़बान दराज़ी करे तो उस से दर गुज़र करना (उस ख़ैरात से बेहतर है जिस के बा'द सताना हो) ।[1]

एह़तिरामे मुस्लिम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! इस्लाम ने एह़तिरामे मुस्लिम का किस क़दर लिह़ाज़ रखा है कि कोई भी शख़्स अपने मुसलमान भाई की माली इमदाद करने के बा'द एह़सान जता कर या त़ा'ना दे कर उस को तक्लीफ़ मत दे, बल्कि उस की इ़ज़्ज़ते नफ़्स का एह़तिराम करे, क्यूंकि सदक़ा व ख़ैरात देने से किसी को येह ह़क़ ह़ासिल नहीं हो जाता कि जब चाहे एह़सान याद दिला कर ग़रीब की इ़ज़्ज़त की धज्जियां बिखेरने लगे। ऐसे सदक़े से तो बेहतर था कि वोह उसे कुछ देता ही नहीं बल्कि उस से कोई अच्छी बात कह देता, मा'ज़िरत कर लेता या किसी और शख़्स के पास भेज देता। यहां उन लोगों के लिये दर्से हिदायत है जो पहले जोश में आ कर ज़रूरत मन्दों की इमदाद तो कर देते हैं मगर बा'द में अपने त़ा'नों के तीरों से उन के सीने छलनी कर देते हैं कि किसी बात पर ज़रा ग़ुस्सा आया फ़ौरन अपने एह़सानात की लम्बी फ़ेहरिस्त सुनाना शुरूअ़ कर देते हैं। बत़ौरे नुमूना त़ा'नों के चन्द तीर पेशे ख़िदमत हैं :

مدینہ

[1] تفسیر خازن، پ۳، البقرۃ، ۱/ ۲۰۶

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

❁➾ कल तक वोह फ़क़ीर था, भीक मांगता फिरता था मेरा दिया हुवा खाता था और आज मुझे ही आंखें दिखाता है।

❁➾ जब उस की मां हस्पताल में ऐड़ियां रगड़ रहीं थी तो मैं ने मदद की थी।

❁➾ उस की बेटी की शादी मैं ने करवाई, सारे एह़सानात भूल गया, नमक ह़राम कहीं का वग़ैरा वग़ैरा।

याद रखिये ! इस त़रह़ की बातों में ख़सारा ही ख़सारा है क्यूंकि माल तो आप दे ही चुके, अब ता'ने दे कर और एह़सान जता कर षवाब ज़ाएअ़ मत कीजिये। चुनान्चे, पारह **3** सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर **264** में है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ

(پ۳، البقرۃ: ۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालों अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।*

तफ़्सीरे मदारिक में ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल बरकात **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद बिन मह़मूद नस्फ़ी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **710** हि.) इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ मुनाफ़िक़ को रिज़ाए इलाही मक़्सूद नहीं होती वोह अपना माल रियाकारी के लिये ख़र्च कर के ज़ाएअ़ कर देता है इस त़रह़ तुम एह़सान जता कर और ईज़ा दे कर अपने सदक़ात का अज्र ज़ाएअ़ न करो।[(1)]

مدینہ

1 تفسیر مدارک، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۴، ص ۱۳۷

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

तीन ज़रूरी बातें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा सदक़ा देने या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च करते हुवे तीन बातें पेशे नज़र रखना बहुत ज़रूरी हैं :

(1) सदक़ा दे कर एह़सान न जताए ।

(2) जिसे सदक़ा दे उस के दिल को त़ा'नों के तीरों से ज़ख़्मी न करे ।

(3) सदक़ा इख़्लास के साथ और रिज़ाए ख़ुदावन्दी के ह़ुसूल के लिये दे ।

मुसलमानों को त़ा'ने दे कर, एह़सान जता कर दिल आज़ारियां करने वालों और रियाकारी की आफ़त में मुब्तला होने वालों के लिये मक़ामे ग़ौर है, इन्हें याद रखना चाहिये कि जब भी सदक़ा व ख़ैरात की सआ़दत ह़ासिल हो तो मज़कूरा तीनों बातों को पेशे नज़र रखें, कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत इन का शुमार भी उन मुफ़्लिसों में हो जो ढेरों नेकियां ले कर आएंगे मगर तही दस्त (ख़ाली हाथ) रह जाएंगे । चुनान्चे,

मुफ़्लिस कौन ?

मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन ह़ज्जाज कुशैरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی रिवायत फ़रमाते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़सार फ़रमाया :

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

क्या तुम जानते हो मुफ़्लिस कौन है ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम में से जिस के पास दराहिम हों न दीगर सामान, वोह मुफ़्लिस है। फ़रमाया : (नहीं ! येह लोग ह़क़ीक़त में मुफ़्लिस नहीं बल्कि) "मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात तो ले कर आएगा मगर साथ ही किसी को गाली भी दी होगी, किसी को तोहमत लगाई होगी, इस का माल नाह़क़ खाया होगा, उस का ख़ून बहाया होगा, इस को मारा होगा। पस (इन सब गुनाहों के बदले में) उस की नेकियों में से कुछ इस मज़लूम को दे दी जाएगी और कुछ उस मज़लूम को। फिर अगर उस के ज़िम्मे जो हुक़ूक़ थे उन की अदाएगी से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो उन मज़लूमों की ख़त़ाएं ले कर उस ज़ालिम पर डाल दी जाएंगी, फिर उसे आग में फेंक दिया जाएगा।"[1]

मज़लूम को नेकियां देनी पड़ेंगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा किसी की दिल आज़ारी के सबब बरोज़े क़ियामत पहाड़ बराबर नेकियां भी कम पड़ सकती हैं, लिहाज़ा किसी को सदक़ा व ख़ैरात देने के साथ साथ उसे त़ा'ना दे कर या एह़सान जता कर उस की दिल आज़ारी करने से डरिये, कहीं ऐसा न हो कि बरोज़े क़ियामत येह शख़्स बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर हो कर अपने ह़क़ के मुत़ालबे

[1] مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب تحریم الظلم، ص ۱۳۹۴، حدیث: ۲۵۸۱

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

में हम से हमारी सारी नेकियां ले ले और हि़साब पूरा न होने की सूरत में उस के गुनाह हम पर डाल दिये जाएं और आख़िर में कहा जाए कि येह वोह मुफ़्लिस इन्सान है जो नेकियों का बहुत बड़ा ख़ज़ाना लाने के बा वुजूद जहन्नम का ईंधन बन रहा है। चुनान्चे, आइये ! मज़्कूरा तीनों अहम बातों का एक मुख़्तसर जाइज़ा लेते हैं कि येह किस त़रह़ हमारी नेकियों को बरबाद कर सकती हैं।

(1-2) ता'ना ज़नी व एह़सान जताना

एह़सान जताना और ता'ना देना बहुत मज़्मूम फ़े'ल है जो किसी मुसलमान को ज़ैब नहीं देता। लिहाज़ा लोगों की मदद कर के भूल जाना चाहिये और कभी भी किसी पर एह़सान नहीं जताना चाहिये। वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मुक़द्दर का हि़स्सा बन सकती है। चुनान्चे,

जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : बा'ज़ लोग एक शख़्स को राहे ख़ुदा में जिहाद वग़ैरा पर भेजते हैं या किसी आदमी पर कुछ ख़र्च करते हैं और उस के नान व नफ़क़ा (अख़राजात) का एहतिमाम करते हैं तो बा'द में उस पर एह़सान जता कर उसे ईज़ा पहुंचाते हैं। मषलन एह़सान जतलाते हुवे कहते हैं कि मैं ने राहे ख़ुदा में इतना इतना ख़र्च किया, बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन के अ़मल का कोई षवाब नहीं। जो लोग किसी को दे कर येह कहते हैं कि क्या मैं ने तुम को इतनी इतनी चीज़ नहीं दी थी ? वोह उस को ईज़ा पहुंचाते हैं।(1)

मदينه

(1) در منثور، البقرة، تحت الآیة: ۲۶۲، ۲/ ۳۹

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

जन्नत से महरूमी का सबब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा फ़रमान से उन लोगों को दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो ग़रीबों की मदद कर के उन्हें अपना ज़र ख़रीद गुलाम समझते हुवे हर लम्ह़ा उन्हें अपने एह़सानात याद कराते रहते हैं और यूं वोह ग़रीब व मिस्कीन लोग हमेशा इन के एह़सानात के बोझ तले दबे रहते हैं और कभी छुटकारा ह़ासिल नहीं कर पाते। येही वजह है कि रह़मते ख़ुदावन्दी से दूरी और जन्नत से महरूमी का एक सबब किसी पर एह़सान कर के उसे बारबार जतलाने को भी ठहराया गया है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तीन शख़्सों की त़रफ़ नज़रे रह़मत नही फ़रमाएगा : मां बाप का नाफ़रमान, आ़दी शराबी और कुछ दे कर एह़सान जताने वाला।[1] और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी रिवायत में है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मां बाप का नाफ़रमान, आ़दी शराबी और एह़सान जताने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।[2]

---

1 شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/ ۱۹۲، حدیث: ۷۸۷۷

2 شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/ ۱۹۱، حدیث: ۷۸۷۴

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

(3) रियाकारी मुनाफ़िक़ीन की सिफ़त है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकियों को हर उस चीज़ से पाक रखना ज़रूरी है जिस से वोह नेकी नेकी न रहे बल्कि दुन्यवी फ़े'ल बन जाए। फ़ी ज़माना अव्वलन तो हम से नेकियां होती ही नहीं और कभी ख़ुश क़िस्मती से कोई नेकी करने में कामयाब हो भी गए तो वोह भी नामो नमूद और रियाकारी की नज़्र हो कर बरबाद हो जाती है। रियाकारी सख़्त तबाह कुन और मुनाफ़िक़ीन की सिफ़त है। लिहाज़ा सदक़ा व ख़ैरात जैसी अ़ज़ीम नेकी दिखावे के बजाए रिज़ाए रब्बुल अनाम के हुसूल के लिये होनी चाहिये। चुनान्चे,

इरशादे बारी तआ़ला है :

كَالَّذِیْ یُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِؕ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَیْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًاؕ لَا یَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَیْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْاؕ وَ اللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ۝۲۶۴ (پ۳، البقرۃ: ۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस की त़रह़ जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिये ख़र्च करे और* **अल्लाह** *और क़ियामत पर ईमान न लाए तो उस की कहावत ऐसी है जैसे एक चट्टान कि उस पर मिट्टी है अब उस पर ज़ोर का पानी पड़ा जिस ने उसे निरा पथ्थर कर छोड़ा अपनी कमाई से किसी चीज़ पर क़ाबू न पाएंगे और* **अल्लाह** *काफ़िरों को राह नहीं देता।*

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

तफ़्सीरे कबीर में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 606 हि.) इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : येह रियाकार मुनाफ़िक़ के अ़मल की मिषाल है कि जिस त़रह़ पथ्थर पर मिट्टी नज़र आती है लेकिन बारिश से वोह सब दूर हो जाती है, ख़ाली पथ्थर रह जाता है। येही ह़ाल मुनाफ़िक़ के अ़मल का है कि देखने वालों को मा'लूम होता है कि अ़मल है ह़ालांकि रोज़े क़ियामत वोह तमाम आ'माल बात़िल होंगे क्यूंकि रिज़ाए इलाही के लिये न थे।[1]

आ'माल की बरबादी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जो शख़्स लोगों के दिखावे के लिये राहे ख़ुदा में कुछ ख़र्च करता है रियाकारी उस के राहे ख़ुदा में ख़र्च किये गए माल को ख़सो ख़ाशाक (घास के तिन्कों) की त़रह़ बहा ले जाती है जैसे बारिश किसी पथ्थर पर जम्अ़ होने वाली मिट्टी को अपने साथ बहा ले जाती है। दुन्या के धोके व रियाकारी में मुब्तला सदक़ा व ख़ैरात करने वाले लोग ब ज़ाहिर येह समझते रहते हैं कि उन के पास नेकियों का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा जम्अ़ है मगर अफ़्सोस जब बरोज़े क़ियामत बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर होंगे और पुरसिश होगी तो उन के नामए आ'माल में रियाकारी के साथ की जाने वाली नेकियों में से कुछ भी न बचेगा।

---

1 تفسیر کبیر، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۴، ۳/۴۷

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पस सदक़ा व ख़ैरात करने वाला जब भी सदक़ा व ख़ैरात करे तो इख़्लास के साथ महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सदक़ा दे, लोगों को दिखाने के लिये सदक़ा दे न ज़रूरत मन्दों से अपनी सख़ावत और दरया दिली के क़सीदे सुनने की निय्यत रखे और न येह ख़्वाहिश करे कि लोगों में उस की फ़य्याज़ी और सख़ावत के डंके बजें। इस लिये कि जो अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर किया जाए वोही बारगाहे ख़ुदावन्दी में क़बूल होता है और जिस अ़मल में रियाकारी का अन्सर शामिल हो वोह कभी क़बूल नहीं होता। चुनान्चे,

महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस अ़मल को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस में राई के दाने बराबर भी रिया हो।[1] और एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी तालिबे शोहरत, रियाकार और लहवो लअ़ब में पड़े रहने वाले शख़्स का कोई अ़मल क़बूल नहीं फ़रमाता।[2] बल्कि एक रिवायत में है कि एक शख़्स ने सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : कल बरोज़े क़ियामत कौन सी चीज़ नजात दिलाएगी ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (अगर नजात चाहता है तो) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को धोका न देना। उस ने (बड़ी हैरानी से) अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कैसे धोका दिया जा

مدینہ

1 الترغیب والترھیب، کتاب الاخلاص، ۱/ ۴۷، حدیث: ۵۴

2 حلیۃ الاولیاء، الربیع بن حثیم، ۲/ ۱۳۹، حدیث: ۱۷۳۲

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

सकता है ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस त़रह़ कि तुम कोई ऐसा काम करो जिस का हुक्म तो तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दिया हो मगर तुम्हारा मक़्सूद ग़ैरुल्लाह की रिज़ा (या'नी लोगों की ख़ुश्नूदी) का हुसूल हो। लिहाज़ा रियाकारी से बचते रहो क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क (असग़र) है और क़ियामत के दिन रियाकार को लोगों के सामने चार नामों से पुकारा जाएगा या'नी ऐ बदकार ! ऐ धोके बाज़ ! ऐ काफ़िर ! ऐ ख़सारा पाने वाले ! तेरा अ़मल ख़राब हुवा और तेरा अज्र बरबाद हुवा, आज तेरे लिये कोई ह़िस्सा नहीं, ऐ धोका देने की कोशिश करने वाले ! अपना अज्र उसी से वुसूल कर जिस के लिये तू अ़मल किया करता था।[1]

ह़सरत व यास की इन्तिहा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रियाकार और सदक़ा दे कर एह़सान जताने और त़ा'ना देने वाले को क़ियामत के दिन अपने आ'माल के ना मक़्बूल होने पर जो ह़सरत व नदामत होगी उसे इस मिषाल से समझिये कि किसी शख़्स के पास एक ऐसा बाग़ हो जिस के नीचे नदियां बहती हों और उस में क़िस्म क़िस्म के दरख़्त उ़म्दा नफ़ीस फलों और मेवों से लदे फन्दे हों, वोह बाग़ फ़रह़त अंगेज़ व दिल कुशा होने के साथ साथ नाफ़ेअ़ और उ़मदा जाएदाद भी हो। मगर वोह शख़्स बुढ़ा हो जाए और

[1] الزواجر عن اقتراف الكبائر، ۱/ ۸۵

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

अपने बाल बच्चों की ख़ातिर कमाने की उस में ताक़त न रहे, उस के बच्चे भी अभी इस क़ाबिल न हों कि मेहनत मज़दूरी कर के अपने बुढ्ढे मां-बाप का सहारा बन सकें।

अल ग़रज़ वोह शख़्स इन्तिहाई ह़ाजत मन्द हो और उस की गुज़र बसर का इन्हिसार भी सिर्फ़ इसी बाग़ पर हो कि अचानक इन्तिहाई तेज़ हवा का एक बगूला आए, जिस में आग हो और वोह बाग़ जल कर ख़ाकिस्तर हो जाए तो उस वक़्त उस शख़्स के रंजो ग़म और ह़सरत व यास का जो आ़लम होगा वोही ह़ाल उस शख़्स का भी होगा जिस ने आ'माले ह़सना तो किये हों मगर रिज़ाए इलाही के लिये नहीं बल्कि रिया की ग़रज़ से और वोह इस गुमान में हो कि मेरे पास नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर जब शिद्दते ह़ाजत का वक़्त या'नी क़ियामत का दिन आए तो **अल्लाह** तआ़ला उन आ'माल को ना मक़्बूल कर दे। चुनान्चे, पारह **3** सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर **266** में इरशाद होता है :

اَیَوَدُّ اَحَدُكُمْ اَنْ تَكُوْنَ لَهٗ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّ اَعْنَابٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ لَهٗ فِیْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَ اَصَابَهُ الْكِبَرُ وَ لَهٗ ذُرِّیَّةٌ ضُعَفَآءُ ۪ فَاَصَابَهَاۤ اِعْصَارٌ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या तुम में कोई इसे पसन्द रखेगा कि उस के पास एक बाग़ हो खजूरों और अंगूरों का जिस के नीचे नदियां बहतीं उस के लिये इस में हर क़िस्म के फलों से है और उसे बुढ़ापा आया और उस के नातुवां बच्चे हैं तो आया उस पर एक बगूला (इन्तिहाई तेज़ हवा का*

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۶۶﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۶۶)

*चक्कर) जिस में आग थी तो जल गया ऐसा ही बयान करता है **अल्लाह** तुम से अपनी आयतें कि कहीं तुम ध्यान लगाओ ।*

इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى दुर्रे मन्सूर में फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि येह ऐसी आयते मुबारका है जिस के मुतअ़ल्लिक़ किसी ने मेरी तशफ़्फ़ी (तसल्ली) नहीं की । तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! मेरे दिल में इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ एक तफ़्सीर है । अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : अपने आप को कमतर न समझिये बल्कि बयान कीजिये । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! येह एक मिषाल है जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बयान फ़रमाया है कि क्या तुम में से कोई येह पसन्द करता है कि वोह तमाम उ़म्र नेक, सालेह़ और सआ़दत मन्दों वाले आ'माल करता रहे यहां तक कि जब वोह बुढ्ढा हो जाए, मौत उस के सर पर मंडलाने लगे, उस की हड्डियां कमज़ोर हो जाएं और उस को नेक आ'माल पर ख़ातिमे की भी ज़ियादा ज़रूरत हो तो उस वक़्त येह बद बख़्तों वाले अ़मल कर के न सिर्फ़ अपने आ'माल बरबाद कर ले बल्कि इस की येह बद आ'मालियां इस के नेक आ'माल को भी जला कर ख़ाकिस्तर कर दें । रावी फ़रमाते हैं

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

इस तफ्सीर ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दिल पर अषर किया और आप ने इसे बहुत पसन्द फ़रमाया ।[1]

इख़्लास कहां है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा रियाकारी में तबाही ही तबाही है, लिहाज़ा याद रखिये आ'माल की क़बूलिय्यत के लिये बुन्यादी शर्त़ इख़्लास है मगर बद क़िस्मती से ब ज़ाहिर ऐसा लगता है कि हमारे आ'माल में इख़्लास बहुत ही कम होता जा रहा है, शोहरत और नामो नुमूद की चाहत ने हमें कहीं का नहीं छोड़ा, फ़ी ज़माना लोगों की एक कषीर ता'दाद को देखा जा सकता है कि मस्जिद या मद्रसे की कोई ज़रूरत पूरी करते हैं तो सब के सामने इस का डंका बजाना भी ज़रूरी समझते हैं, लिहाज़ा अगर उन का नाम ले कर ए'लान न किया जाए या उन के नाम की तख़्ती न लगाई जाए तो बसा अवक़ात नाराज़ हो जाते हैं। इसी त़रह़ किसी के घर में ख़ुशियों के शादयाने बज रहे हों और माली मुश्किलात उस की मुस्कुराहटों पर पानी फेरने वाली हों या कोई बीमारियों वग़ैरा के बोझ से ग़मों के पहाड़ तले दबा हो तो ऐसे मौक़अ़ पर देखा जाता है कि बा'ज़ लोग इन अफ़राद की मदद इस लिये करते हैं कि बिरादरी या मुआ़शरे में उन की दरया दिली का शोहरा हो।

---

1 درمنثور، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۶۲، ۲/ ۴۸

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

आख़िर हम क्यूं लोगों को अपनी नेकियां बताना चाहते है ? आह ! इख़्लास कहां चला गया ? क्या हमारे इस त़र्ज़े अ़मल में कहीं दूर दूर तक इख़्लास का पता चलता है ?

इख़्लास की पहचान

अगर जानना चाहते हैं कि हमारे आ'माल में इख़्लास है या नहीं तो इस का आसान त़रीक़ा येह है कि हम अपनी निय्यत और कैफ़िय्यत पर ग़ौर करें कि अ़मल करते वक़्त हमारी निय्यत क्या होती है और अ़मल के बा'द हमारी कैफ़िय्यत क्या होती है। चुनान्चे, इख़्लास की पहचान के सिलसिले में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं : "मुख़्लिस वोह है कि जिस त़रह़ अपने गुनाहों को छुपाता है इसी त़रह़ अपनी नेकियों को भी छुपाए।"[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज के दौर में कौन है जो नेकियों को गुनाहों की त़रह़ छुपाता है ? अगर कोई कहे कि लोग गुनाहों का भी चर्चा करते हैं मषलन किसी ने फ़िल्म देख ली तो वोह अगले दिन आ कर दोस्तों में फ़िल्म की कहानी सुनाता है। तो ऐसों की ख़िदमत में अ़र्ज़ है कि ऐसा वोही लोग करते हैं जिन का अपनी मजालिस में ऐसी बातों का तज़्किरा करना मा'यूब नहीं समझा जाता। वरना बिलफ़र्ज़ अगर कोई मज़्हबी वज़्अ़

---

1 ...इख़्लास की पहचान और रियाकारी की तबाहकारी से आगाही के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान "**नेकियां छुपाओ**" सुनना मुफ़ीद रहेगा।

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

क़त्अ़ वाला शख़्स शैत़ान के बहकावे में आ कर रात के अन्धेरे में ऐसी ह़रकत कर बैठे तो वोह कभी भी लोगों को नहीं बताएगा कि मैं ने फ़ुलां गुनाहों भरा काम किया है। अलबत्ता ! येह मुमकिन है कि वोह अपनी नेकियों के मुतअ़ल्लिक़ दूसरों को बताता फिरे ख़्वाह उस ने येह नेकियां रात के अन्धेरे में की हों या दिन के उजाले में। चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने हमें मुख़्लिस बनने का जो आसान त़रीक़ा अ़त़ा फ़रमाया है, ऐ काश ! हम इस के मिस्दाक़ बन जाएं और जिस त़रह़ अपने गुनाहों को छुपाते हैं इसी त़रह़ अपनी नेकियों को भी छुपाने लगें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इस का मिस्दाक़ बना दे और इख़्लास के साथ सदक़ात व ख़ैरात करने और ख़ूब ख़ूब नेक आ'माल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

इख़्लास की बरकतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बारगाहे ख़ुदावन्दी में सदक़ा व ख़ैरात की क़बूलिय्यत का सबब माल की कषरत या क़िल्लत नहीं बल्कि इख़्लास की दौलत है। चुनान्चे, कोई राहे ख़ुदा में कम ख़र्च करे या ज़ियादा, अगर उस में ख़ुलूस नहीं तो उसे कोई फ़ाइदा ह़ासिल न होगा और अगर उस में ख़ुलूस होगा तो उस के अज्रो षवाब का बाग़ हमेशा फलता फूलता रहेगा, क्यूंकि इख़्लास में बड़ी बरकतें हैं। चुनान्चे, मुख़्लिसीन के आ'माल की मिषाल देते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूरए बक़रह की 265 वीं आयत में इरशाद फ़रमाता है :

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ اَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۭ بِرَبْوَةٍ اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ اُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ۚ فَاِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۲۶۵﴾

(پ۳، البقرۃ: ۲۶۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन की कहावत जो अपने माल* **अल्लाह** *की रिज़ा चाहने में ख़र्च करते हैं और अपने दिल जमाने को। उस बाग़ की सी है जो भूड़ (रैतीली ज़मीन) पर हो उस पर ज़ोर का पानी पड़ा तो दूने मेवे लाया फिर अगर ज़ोर का मींह उसे न पहुंचे तो औस काफ़ी है और* **अल्लाह** *तुम्हारे काम देख रहा है।*

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़य्युस्सुन्नह, अबू मुह़म्मद हुसैन बिन मसऊ़द बग़वी (मुतवफ़्फ़ा **510** हि.) तफ़्सीरे बग़वी में फ़रमाते हैं : येह मोमिन मुख़्लिस के आ'माल की एक मिषाल है कि जिस त़रह़ बुलन्द ख़ित्ते की बेहतर ज़मीन का बाग़ हर ह़ाल में ख़ूब फ़लता है ख़्वाह बारिश कम हो या ज़ियादा ऐसे ही बा इख़्लास मोमिन का सदक़ा और इनफ़ाक़ ख़्वाह कम हो या ज़ियादा **अल्लाह** तआ़ला उस को बढ़ाता है।[1] और इख़्लास की पहचान के मुतअ़ल्लिक़ सदरूल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى सूरए नह़्ल की **66** वीं आयते मुबारका की तफ़्सीर में ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى का एक क़ौल कुछ यूं नक़्ल फ़रमाते हैं कि ने'मत का इतमाम (कमाल) येही है कि दूध

مدینہ

1 تفسیر بغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۶۵، ۱/ ۱۹۱

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

साफ़ ख़ालिस आए और उस में ख़ून और गोबर के रंग व बू का नामो निशान न हो, वरना ने'मत ताम (मुकम्मल) न होगी और त़बए़ सलीम इस को क़बूल न करेगी। जैसी साफ़ ने'मत परवर दगार की त़रफ़ से पहुंचती है बन्दे को लाज़िम है कि वोह भी परवर दगार के साथ इख़्लास से मुआ़मला करे और उस के अ़मल रिया और हवाए नफ़्स की आमेज़िशों से पाक व साफ़ हो ताकि शरफ़े क़बूल से मुशर्रफ़ हों।[1]

माल एक आज़माइश है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा जिन इस्लामी भाइयों के पास इस क़दर कषीर माल न हो कि वोह दिल खोल कर राहे ख़ुदा में ख़र्च कर सकें तो वोह ग़मज़दा न हों बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दिये हुवे माल से अपनी हैषिय्यत के मुत़ाबिक़ राहे ख़ुदा में ख़र्च करते रहें क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मिक़्दार नहीं बल्कि निय्यतों का इख़्लास देखता है। नीज़ याद रखिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ लोगों को वाफ़िर माल अ़त़ा फ़रमाता है ताकि उन्हें आज़माए कि वोह इस माल के ज़रीए़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पैदाकर्दा बे शुमार ने'मतों से सरशार हो कर शुक्र अदा करते हैं या नहीं और बा'ज़ों को माल न दे कर आज़माता है कि क्या वोह रूखी सूखी पर सब्र करते हैं या नहीं। इस के इ़लावा येह भी याद रखिये कि माल एक ज़हरीले सांप की त़रह़ है जिस का

مدینہ

1 خزائن العرفان، پ۱۴، النحل، تحت الآیۃ: ۶۶

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

ज़ह्र किसी की हलाकत का सबब भी बन सकता है तो किसी की जान बत़ौरे तिर्याक़ बचा भी सकता है, इस लिये कि माल के फ़वाइद इस के तिर्याक़ और इस की आफ़ात इस का ज़ह्र हैं और वोही शख़्स माल के शर से बच कर इस की भलाई ह़ासिल कर सकता है जो इस के फ़वाइद और आफ़ात को पहचानता है । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बनी इस्राईल में तीन शख़्स थे । एक बर्स वाला, दूसरा गंजा, तीसरा अन्धा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन का इम्तिह़ान लेना चाहा, इन के पास (इन्सानी सूरत में) एक फ़िरिश्ता भेजा । पहले वोह बर्स के मरीज़ के पास आया और उस से पूछा : तुझे सब से ज़ियादा कौन सी चीज़ मह़बूब है ? उस ने कहा : मुझे अच्छा रंग और अच्छी जिल्द पसन्द है और मेरी ख़्वाहिश है कि जिस बिमारी की वजह से लोग मुझ से नफ़रत करते हैं वोह मुझ से दूर हो जाए । फ़िरिश्ते ने उस के जिस्म पर हाथ फेरा तो उस की वोह बीमारी जाती रही, उस का रंग भी अच्छा हो गया और जिल्द भी अच्छी हो गई । फिर फ़िरिश्ते ने उस से पूछा : तुझे कौन सा माल ज़ियादा पसन्द है ? उस ने कहा : मुझे ऊंटनी पसन्द है । उसी वक़्त उसे दस माह की ह़ामिला ऊंटनी दे दी गई और फ़िरिश्ते ने दुआ़ दी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे इस में बरकत दे । फिर वोह फ़िरिश्ता गंजे के पास

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

आया और उस से पूछा : तुझे कौन सी शै सब से ज़ियादा महबूब है ? उस ने कहा : मुझे ख़ूब सूरत बाल ज़ियादा पसन्द हैं और मैं चाहता हूं कि जिस चीज़ की वजह से लोग मुझ से घिन खाते हैं वोह दूर हो जाए। फ़िरिश्ते ने उस पर हाथ फेरा तो उस की वोह शै जाती रही जिस से लोग घिन खाते थे और उस के सर पर बेहतरीन बाल आ गए। फ़िरिश्ते ने पूछा : तुझे कौन सा माल ज़ियादा पसन्द है ? उस ने कहा : मुझे गाए बहुत पसन्द है। चुनान्चे, उसे एक गाभन गाए दे दी गई। फ़िरिश्ते ने उस के लिये दुआ़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे इस में बरकत दे। फिर फ़िरिश्ता अन्धे के पास आया और उस से कहा : तुझे सब से ज़ियादा कौन सी चीज़ महबूब है ? उस ने कहा : मुझे येह पसन्द है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी बीनाई मुझे वापस कर दे ताकि मैं लोगों को देख सकूं। फ़िरिश्ते ने उस पर हाथ फेरा तो उस की आंखें रोशन हो गईं। फिर उस से पूछा : तुझे कौन सा माल ज़ियादा महबूब है ? उस ने कहा : बकरियां। चुनान्चे, उसे एक गाभन बकरी दे दी गई।

अब ऊंटनी, गाए और बकरी ने बच्चे देना शुरूअ़ किये। कुछ ही अ़र्से में उन के जानवर इतने बढ़े कि एक के ऊंटों, दूसरे की गाइयों और तीसरे की बकरियों से एक पूरी वादी भर गई। फिर फ़िरिश्ता उस बर्स के साबिक़ा मरीज़ के पास उस की पहली सूरत या'नी बर्स की ह़ालत में आया और उस से कहा : मैं एक

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

ग़रीब व मिस्कीन शख़्स हूं, मेरे पास ज़ादे राह ख़त्म हो गया है और वापस जाने की कोई सूरत नज़र नहीं आती मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है और मैं तेरी मदद का त़लब गार हूं। जिस ज़ात ने तुझे ख़ूब सूरत रंग, अच्छी जिल्द और माल अ़त़ा किया मैं तुझे उस का वासित़ा देता हूं कि आज मुझे एक ऊंट दे दे ताकि मैं अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सकूं। येह सुन कर उस ने इन्कार करते हुवे कहा : मेरे हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं। तो फ़िरिश्ते ने कहा : मेरे ख़याल से मैं तुझे जानता हूं, क्या तू वोही नहीं जिस को कोढ़ की बीमारी लाह़िक़ थी, लोग तुझ से नफ़रत किया करते थे और तू फ़क़ीर व मोह़ताज था, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे माल अ़त़ा किया। उस ने कहा : मुझे तो येह सारा माल विराषत में मिला है और नस्ल दर नस्ल येह माल मुझ तक पहुंचा है। फिरिश्ते ने कहा : अगर तू अपनी इस बात में झूटा है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे ऐसा ही कर दे जैसा तू पहले था। फिर वोह फ़िरिश्ता साबिक़ा गंजे के पास उस की पहली सूरत में आया और उस से भी वोही बात कही जो बर्स वाले से कही थी। उस ने भी बर्स वाले की त़रह़ जवाब दिया। फ़िरिश्ते ने कहा : अगर तू अपनी बात में झूटा है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तेरी साबिक़ा ह़ालत पर लौटा दे। फिर फ़िरिश्ता साबिक़ा अन्धे के पास उस की पहली ह़ालत में आया और कहा : मैं एक मिस्कीन मुसाफ़िर हूं और मेरा ज़ादे राह ख़त्म हो चुका है। आज के दिन मैं अपनी मन्ज़िल तक नहीं पहुंच सकता मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़ात से उम्मीद है और उस के बा'द मुझे तेरा आसरा है। मैं उसी ज़ात का वासित़ा दे कर तुझ से सुवाल करता हूं जिस ने तुझे आंखें

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

अ़ता फ़रमाई कि मुझे एक बकरी दे दे ताकि मैं अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सकूं। तो वोह कहने लगा : मैं तो पहले अन्धा था फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आंखें अ़ता फ़रमाई तू जितना चाहे इस माल में से ले ले और जितना चाहे छोड़ दे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू जितना माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर लेना चाहे ले ले, मैं तुझे मशक़्क़त में न डालूंगा (या'नी मन्अ़ न करूंगा)। येह सुन कर फ़िरिश्ते ने कहा : तेरा माल तुझे मुबारक हो, येह सारा माल तू अपने पास ही रख। तुम तीनों शख़्सों का इम्तिहान लिया गया था, तेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है और तेरे दोनों दोस्तों (या'नी कोढ़ी और गंजे) के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी है।[1]

सदक़े में कौन सा माल दिया जाए ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ता कर्दा माल में से राहे ख़ुदा में देने से माल में ज़ियादती होती है और बन्दे का शुमार रब के शुक्र गुज़ार बन्दों में होता है और जो लोग इस बात को भूल जाते हैं तो उन के मुक़द्दर में दुन्या व आख़िरत की ठोकरें लिख दी जाती हैं। मगर सुवाल येह है कि जब हर क़िस्म का माल ख़्वाह अच्छा हो या बुरा, परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का ही दिया हुवा है तो बन्दा राहे ख़ुदा में कैसा माल ख़र्च करे कि वोह माल बारगाहे ख़ुदावन्दी में क़बूल हो जाए। चुनान्चे,

1 مسلم، کتاب الزھد... الخ، باب الدنیا سجن للمؤمن... الخ، ص ۱۵۸۴، حدیث: ۲۹۶۴
بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب حدیث ابرص واعمی واقرع فی بنی اسرائیل، ۲/۴۶۳، حدیث: ۳۴۶۴

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

सदक़ा देने के लिये माल कैसा होना चाहिये इस के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक में हमारी रहनुमाई के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सूरए बक़रह की **267** वीं आयत में इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّاۤ اَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ ۪ وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ اِلَّاۤ اَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ؕ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ﴿۲۶۷﴾

(پ۳، البقرۃ:۲۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपनी पाक कमाइयों में से कुछ दो और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला और ख़ास नाक़िस का इरादा न करो कि दो तो उस में से और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक इस में चश्मपोशी न करो और जान रखो कि **अल्लाह** बे परवाह सराहा गया है।*

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस आयत में हमें येह बताया जा रहा है कि राहे ख़ुदा में दिया जाने वाला माल कैसा होना चाहिये । चुनान्चे, फ़रमाया कि राहे ख़ुदा में दिया जाने वाला माल रद्दी, नाकारा और नाक़ाबिले इस्ति'माल न हो बल्कि ऐसा हो जैसा हम ख़ुद अपने लिये पसन्द करते हैं । मगर अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! हमारा तर्ज़े अ़मल येह है कि जब कोई शै बिल्कुल नाकारा हो गई, इस्ति'माल के क़ाबिल न रही तो उठा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर सदक़ा कर दी, रोटियों पर फफोन्दी लग गई, सालन नाराज़ (बासी व ख़राब) हो गया तो बान्ध कर घर में काम करने वाली मासी को पकड़ा दिया, सैलाब

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

ज़दगान वग़ैरा आफ़तज़दा लोगों को इमदाद के नाम पर ऐसे कपड़े वग़ैरा भेज दिये जो पहनने के क़ाबिल ही नहीं। हां येह ज़रूर है कि बा'ज़ अश्या अहले षरवत ह़ज़रात के ए'तिबार से इस्ति'माल के लाइक़ नहीं होतीं मगर ग़ुरबा के ए'तिबार से वोह एक ने'मत होती हैं मषलन क़ाबिले इस्ति'माल पुराने कपड़े, पुराने बिस्तर और दूसरी कारआमद चीज़ें नोकरों वग़ैरा को दी जा सकती हैं। ऐसा नहीं कि घर में पड़े पड़े दवाइयां एक्सपायर (Expier) हो गईं तो उठा कर हस्पताल में दे आए ताकि वोह ग़रीबों को दे दें और येह तक न सोचा कि कोई इस्ति'माल करेगा तो फ़ाइदे के बजाए नुक़्सान उठाएगा।

ज़रा सोचिये और ग़ौर फ़रमाइये ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें सदक़ा देने वाला बनाने के बजाए सदक़ा लेने वाला बना देता तो हमारा क्या होता ? क्या ऐसी अश्या इस्ति'माल करने को हमारा जी चाहता ? लिहाज़ा याद रखिये, इस्लाम ने तो हमें येह हुक्म दिया है कि जो अपने लिये पसन्द करो वोही दूसरों के लिये भी पसन्द करो। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक (कामिल) मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अपने भाई के लिये भी उस चीज़ को पसन्द न करे जिस को वोह अपने नफ़्स के लिये पसन्द करता है।[1]

---

1 بخاری، کتاب الایمان، باب من الایمان ان یحب۔۔۔الخ، ۱/۱۶، حدیث: ۱۳

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा सदक़ा व ख़ैरात करना हो या दीगर बाहमी तअ़ल्लुक़ात व मुआ़मलात हों हमें अपने मुसलमान भाइयों की ख़ैर ख़्वाही और भलाई को पेशे नज़र रखते हुवे इन के लिये वोही पसन्द करना चाहिये जो अपने लिये पसन्द करते हैं।

सदक़ा अ़लानिय्या देना अफ़्ज़ल है या छुपा कर ?

सदक़ा व ख़ैरात अ़लानिय्या करना बेहतर है या छुपा कर, इस के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने मजीद में इरशादे रब्बे काइनात होता है :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ ؕ وَ یُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَیِّاٰتِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ ﴿۲۷۱﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर ख़ैरात अ़लानिय्या दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और* **अल्लाह** *को तुम्हारे कामों की ख़बर है।*

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़य्युस्सुन्नह, अबू मुह़म्मद हुसैन बिन मसऊ़द बग़वी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा **510** हि.) तफ़्सीरे बग़वी में फ़रमाते हैं : सदक़ा ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल जब इख़्लास से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये दिया जाए और रिया से पाक हो तो ख़्वाह ज़ाहिर कर के दें या छुपा कर दोनों बेहतर हैं। लेकिन सदक़ए फ़र्ज़ का ज़ाहिर कर के देना अफ़्ज़ल है और नफ़्ल का छुपा कर और अगर नफ़्ल सदक़ा देने वाला दूसरों को ख़ैरात

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

की तरग़ीब देने के लिये ज़ाहिर कर के दे तो येह इज़हार भी अफ़्ज़ल है ।[1]

इज़हार या इख़्फ़ा का मदार निय्यत पर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदक़ा व ख़ैरात का मुआ़मला हो या दीगर इबादात का, इन में अज्रो षवाब का मदार निय्यत पर है, इस लिये कि अगर निय्यत दुरुस्त हो तो येह आ'माल ज़ाहिरन किये जाएं तो भी बाइषे अज्रो षवाब हैं और अगर निय्यत में फ़ुतूर हो तो इख़्फ़ा (छुपाना) भी बाइषे हलाकत है, हां निय्यत की दुरुस्ती के साथ फ़राइज़ व वाजिबात का इज़हार मुनासिब है ताकि लोग बद गुमानी न करें और नवाफ़िल में इख़्फ़ा बेहतर है ताकि रिया के शाइबे से भी महफ़ूज़ रहा जा सके, इसी त़रह़ आ'माल के इज़हार की एक सूरत येह भी है कि कोई शख़्स लोगों का पेशवा है और उस के अ़मल से इन्हें नेकियों की तरग़ीब मिलेगी तो उस को अपनी नेकियां लोगों पर ज़ाहिर करना जाइज़ व अफ़्ज़ल है । या'नी फ़क़ीह, मुह़द्दिष, मुर्शिद, वाइ़ज़, उस्ताज़ या ऐसा कोई भी शख़्स जिस की लोग पैरवी करते हों इन ह़ज़रात का अपनी नेकियां ज़ाहिर करना बेहतर है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लिशान है : ख़ुफ़्या इबादत अ़लानिय्या इबादत से अफ़्ज़ल है

---

1 تفسیر بغوی، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۲۷۱، ۱/ ۱۹۱

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

और मुक़्तदा बेह (या'नी लोग जिस की पैरवी करते हैं) की अ़लानिय्या (इ़बादत) ख़ुफ़्या (इ़बादत) से अफ़्ज़ल है।[1]

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़ में लिखते हैं कि अपनी इ़बादात लोगों को दिखाना (ता'लीम के लिये) येह रिया नहीं बल्कि इ़ल्मी तब्लीग़ व ता'लीम है इस पर षवाब है। मशाइख़ फ़रमाते हैं : सिद्दीक़ीन की रिया मुरीदीन के इख़्लास से बेहतर है। इस का येही मत़लब है।[2]

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लाखों मुसलमानों के दिलों की धड़कन और आंखों का नूर हैं, मुसलमानों का एक बहुत बड़ा त़बक़ा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से दिल की गहराइयों से मह़ब्बत करता है बल्कि कहना चाहिये कि आप को देख देख कर जीता है और आप की हर हर अदा अपनाने की कोशिश करता है। चुनान्चे, इसी लिये बा'ज़ अवक़ात आप ख़ुद अपनी सीरत के मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त बयान करते हैं या बा'ज़ अवक़ात मुख़्तलिफ़ सुन्नतों भरे बयानात में आप की सीरत के रोशन गोशे बयान किये जाते हैं ताकि आप से दिल की गहराइयों से मह़ब्बत करने वाले लोगों को जब आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ख़ौफ़े ख़ुदा,

1 شعب الایمان ۴۶، باب فی السرور بالحسنة والاغتمام بالسیئة، ۵/۳۷۶، حدیث: ۷۰۱۲

2 مِرْآة المناجیح، ۷/۱۲۷

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

इश्क़े मुस्त़फ़ा और परहेज़गारी व तक़्वा के अह़वाल और मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ मा'लूम हों तो वोह भी इन अवसाफ़ को अपनाने वाले बन जाएं।

अ़लानिय्या सदक़ा देने की ममनूअ़ सूरत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात नेक काम करते हुवे हम दूसरों की दिल आज़ारी कर बैठते हैं और इस बात का हमें एह़सास तक नहीं होता बल्कि ख़ुश हो रहे होते हैं कि हम ने येह नेक काम किया मगर याद रखिये जिस नेकी की बुन्याद किसी की दिल आज़ारी व दिल शिकनी पर रखी गई हो उस पर अज्रो षवाब की उम्मीद रखना फ़ुज़ूल है। मिषाल के त़ौर पर हम बा'ज़ अवक़ात किसी सफ़ेद पोश शख़्स की मदद इस त़रह़ अ़लानिय्या करते हैं कि उस की सफ़ेद पोशी का भरम ख़त़रे में पड़ जाता है। चुनान्चे,

पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 264 में है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَ الْاَذٰىۙ

(پ۳، البقرۃ: ۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अपने सदक़े बात़िल न कर दो एह़सान रख कर और ईज़ा दे कर।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان "नूरुल इरफ़ान" में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से इशारतन मा'लूम हो रहा है कि अगर सदक़ा ज़ाहिर करने से फ़क़ीर की बदनामी हो तो सदक़ा उसे छुपा कर दो कि किसी को ख़बर न हो। ऐसी सूरत में सदक़े को ज़ाहिर करना "अज़ा" (या'नी ईज़ा देने) में दाख़िल है।

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

नज़राना देने का अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से येह भी मा'लूम हुवा कि जब कभी उ़-लमाए किराम व मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम वग़ैरा की माली ख़िदमत करें तो लिफ़ाफ़े वग़ैरा में डाल कर इस त़रह़ दें कि किसी को येह समझ न आए कि आप ने उन को नज़राना पेश किया है। बा'ज़ लोगों का अन्दाज़ येह होता है कि इमाम साहि़ब वग़ैरा के हाथ में रक़म रख कर उन की हथेली को मख़्सूस अन्दाज़ में बन्द कर देते हैं इस त़रह़ देखने वाला येही समझता होगा कि इन को नज़राना दिया है, बल्कि बा'ज़ लोग तो दुआ़ के लिये परची भी इसी अन्दाज़ में देते हैं कि लोगों पर तअष्षुर क़ाइम होता है कि "ह़ज़रत" को नज़राना दिया गया है ! दुआ़ की परची देने का येह अन्दाज़ सफ़ेद पोश के लिये ईज़ा का बाइ़ष हो सकता है।

सदक़ा किसे देना अफ़्ज़ल है ?

यहां तक सदक़ा व ख़ैरात के कुछ आदाब व अह़काम बयान हुवे, अब सुवाल येह पैदा होता है कि सदक़ा किसे देना अफ़्ज़ल है ? चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِیْنَ اُحْصِرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ ضَرْبًا فِی الْاَرْضِ٘ یَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِیَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِۚ تَعْرِفُهُمْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन फ़क़ीरों के लिये जो राहे ख़ुदा में रोके गए ज़मीन में चल नहीं सकते, नादान उन्हें तवंगर (दौलत*

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿۲۷۳﴾ (پ۳، البقرۃ: ۲۷۳)

मन्द) समझे बचने के सबब तू उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा, लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़ गिड़ाना पड़े और तुम जो ख़ैरात करो **अल्लाह** *उसे जानता है।*

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत का शाने नुज़ूल बयान करते हुवे तफ़्सीरे नईमी में फ़रमाते हैं : मस्जिदे नबवी के पास एक सुफ़्फ़ा (चबूतरा) था। जहां चार पांच सो फ़ुक़रा मुहाजिरीन रहते थे। जिन के पास न घर था न दुन्यवी सामान, न कोई कारोबार, हमेशा मस्जिद में रहना, दिन में रोज़ा, तिलावते क़ुरआन और रात में शब बेदारी, हर जिहाद में लश्करे इस्लाम के साथ जाना इन का काम था। इन्हें अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा कहते हैं या'नी चबूतरे पर रहने वाले। न इन ह़ज़रात की शादी हुई न इन का यहां कुम्बा व क़बीला था। इन की ग़रीबी का येह ह़ाल था कि इन में सत्तर (70) के पास सित्रपोशी के लिये पूरा कपड़ा भी न था। इन के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते क़रीमा उतरी जिस में मुसलमानों को इन्हें सदक़ा व ख़ैरात देने की रग़बत दी गई।[1]

मुफ़्ती साह़िब मज़ीद फ़रमाते है : सदक़ा व ख़ैरात उन ग़रीब उ-लमा, त़लबा, मुदर्रिसीन और दीन के ख़ादिमों वग़ैरा को देना अफ़्ज़ल है जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां ख़िदमते दीन के

[1] تفسیر نعیمی، ۳/۱۳۲ مفہوماً

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

लिये वक़्फ़ कर दी हैं। अगर इन की ख़िदमत न की गई और येह त़लबे मआ़श के लिये मजबूरन मश्ग़ूल हुवे तो दिने इस्लाम का सख़्त नुक़्सान होगा।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों की तवज्जोह अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की त़रफ़ मबज़ूल कराई लेकिन येह हुक्म इन के लिये मख़्सूस नहीं। दौरे ह़ाज़िर में भी जो लोग ख़िदमते दीन में मश्ग़ूल रहते हैं और इस मश्ग़ूलिय्यत की बिना पर कसबे मआ़श (कारोबार वग़ैरा) के लिये वक़्त नहीं निकाल सकते, उन के मुतअ़ल्लिक़ भी येही हुक्म है कि उन की माली ख़िदमत की जाए।[2]

येह निहायत तवज्जोह त़लब बात है ! वोह अफ़राद जिन्हों ने खुद को इल्मे दीन सीखने सीखाने के लिये वक़्फ़ कर दिया है, चाहे मद्रसे में दाख़िला ले कर ह़ाफ़िज़ व आ़लिमे दीन बन कर या दा'वते इस्लामी के मदनी कामों के लिये वक़्फ़ हो कर, इन की माली ज़रूरियात पूरी करने की ज़िम्मेदारी हमारी है, देखिये हम कारोबार करते हैं या नोकरी वग़ैरा कर के दिन रात एक कर देते हैं ताकि हमारा घर चले, येह सब काम येह ख़ादिमाने दीन भी कर सकते थे लेकिन इन्हों ने सब कुछ छोड़ कर खुद को दीन के कामों के लिये वक़्फ़ कर दिया, हमें फ़िक्र है कि हमारा घर बार चले जब कि इन्हें फ़िक्र है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मदीना

1 (तफ़्सीरे नईमी, 3/134)

2 वक़्फ़े मदीना, स.31

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

के दीन का काम चले, हमें फ़िक्र है कि हमारी आल अवलाद खुश रहे इन्हें फ़िक्र है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत राहे मुस्तक़ीम पर गामज़न रहे, कभी झांक कर देखिये किसी दारुल उ़लूम में कि जहां قَالَ اللهُ وَقَالَ رَسُوْلُ الله की सदाएं गूंजती हैं, उ़लूमे दीनिया के येह मराकिज़ किस त़रह़ गुज़ारा करते हैं, हमारे घर मेहमान आ जाए तो उस के आगे हम दुन्या जहां की ने'मतें चुन देते हैं मगर इन रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मेहमानों की जानिब नज़र उठा कर भी देखना गवारा नहीं करते, अपनी अवलादों को मुरग़्ग़न ग़िज़ाएं खिलाने वालो ..! कभी दर्से निज़ामी पढ़ने वाले बच्चों की त़रफ़ झांक कर देखो कि येह किस त़रह़ दाल रोटी और सब्ज़ी खा कर अपना वक़्त गुज़ारते हैं, इन को मिलता है तो खाते हैं नहीं मिलता तो नहीं खाते, आप का बच्चा बीमार हो जाए, छींक ही आ जाए तो उसे गोद में उठा कर डॉकटर के पास भागते हो, उन मां बाप के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहते हो जिन्हों ने अपनी अवलाद को दीन फैलाने के लिये आठ साल के लिये जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल करवा दिया, वोह भी तो उन के लख़्ते जिगर हैं, वोह भी तो उन के जिगर के टुकड़े हैं, उन्हें भी तो अपने बच्चों से मह़ब्बत है लेकिन उन मां बाप पर क़ुरबान जाइये कि जिन का येह ज़ेह्न नहीं है कि मेरा बेटा एम.बी.बी.एस. **(MBBS)** कर के डॉकटर बन जाए या इन्जीनियरिंग (Engineering) की डीग्री ले कर इन्जीनियर (Engineer) बन जाए और मेरी दुन्या संवार जाए। नहीं ! येह वोह मां-बाप हैं कि दुन्या में मेरा बेटा काम आए या न आए जब क़ियामत के दिन उठूं तो मेरा बेटा मेरी शफ़ाअ़त का ज़रीआ़ बन

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

जाए, येह अपने बच्चों को ह़ाफ़िज़ बनाते हैं आ़लिम बनाते हैं, मुफ़्ती बनाते हैं, मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाते हैं, मदनी तर्बिय्यती कोर्स करवाते हैं, क़ाफ़िला कोर्स करवाते हैं, इमामत कोर्स करवाते हैं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐ काश !!! हमारा मदनी ज़ेह्न बन जाए, हम अपने आप को और अपने बच्चों को इ़ल्मे दीन सीखने के लिये वक़्फ़ करने का ज़ेह्न बना लें, ऐ काश..! सद करोड़ काश..! और अगर आप येह नहीं कर पा रहे, कारोबार नहीं छूट रहा न दौलत की हवस दिल से जा रही है न इन्डस्ट्री और फ़ेक्ट्रियों की सोच ख़त्म हो रही है, तो कम अज़ कम यूं तो करें कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में वक़्फ़ हो चुका है, इ़ल्मे दीन सीखने के लिये दर्से निज़ामी कर रहा है, इस्लाम की इशाअ़त और सुन्नतों को फैलाने के लिये मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बन रहा है, अपनी दौलत के दरवाज़े उन पर खोल दें, इस त़रह़ आप दीन की ख़िदमत कर के इस्लाम के फैलने का सबब बन सकते हैं जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बे ह़िसाब अज्रों षवाब अ़त़ा फ़रमाएगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें एह़सान जताने और त़ा'ना ज़नी जैसी आफ़ात से बचते हुवे मह़ज़ अपनी रिज़ा के लिये **सदक़ा व ख़ैरात** करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

ماخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف
1	قرآن مجید	کلام باری تعالٰی مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ (کراچی)
2	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ (کراچی)
3	تفسیر بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
4	تفسیر کبیر	امام محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	تفسیر قرطبی	ابو عبد اللہ محمد بن احمد قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
6	تفسیر بیضاوی	ناصر الدین عبد اللہ بن عمر بن محمد شیرازی، متوفی ۶۸۵ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
7	تفسیر مدارک	امام عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی، متوفی ۷۱۰ھ، دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
8	تفسیر خازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ، مطبعۃ المیمنیۃ، مصر ۱۳۱۷ھ
9	الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ، دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
10	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسوی، متوفی ۱۱۳۷ھ، دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۰۵ھ
11	خزائن العرفان	صدر الافاضل نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ، مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ (کراچی)
12	تفسیر نعیمی	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ، ضیاء القرآن پبلی کیشنز، لاہور
13	تفسیر نور العرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ، ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور
14	مصنف عبد الرزاق	امام عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

15	صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ، دار الکتب العلمیہ، ۱۴۱۹ھ
16	صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ، دار ابن حزم، بیروت ۱۴۱۹ھ
17	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
18	المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۲۲ھ
19	المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ، دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
20	شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
21	حلیۃ الاولیاء	ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
22	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ، دار الفکر، بیروت
23	اشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ، کوئٹہ ۱۳۳۲ھ
24	مرأۃ المناجیح	مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ، ضیاء القرآن پبلی کیشنز، مرکز الاولیاء لاہور
25	الزواجر	ابو العباس احمد بن محمد بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ، دار المعرفۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
26	روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد یافعی، متوفی ۷۶۸ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
27	نزھۃ المجالس	عبد الرحمن بن عبد السلام صفوری شافعی، متوفی ۸۹۴ھ، دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
28	قلیوبی	شیخ علامہ احمد شہاب الدین قلیوبی، متوفی ۱۰۶۹ھ، باب المدینہ (کراچی)
29	کتاب التعریفات	سید شریف علی بن محمد بن علی جرجانی، متوفی ۸۱۶ھ، دار المنار للطباعۃ والنشر

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	तीन ज़रूरी बातें	28
सदक़े का इन्आ़म	1	मुफ़्लिस कौन?	28
अस्लाफ़ का मा'मूल	4	मज़लूम को नेकियां देनी पड़ेंगी	29
सदक़ा व ख़ैरात का षवाब	5	(1-2) त़ा'ना ज़नी व एह़सान जताना	30
राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से मुराद	5	जन्नत से मह़रूमी का सबब	31
षवाब में कमी बेशी	6	(3) रियाकारी मुनाफ़िक़ीन की सिफ़त है	32
षवाब में फ़र्क़	8	आ'माल की बरबादी	33
मिक़्दार में कम, दरजे में ज़ियादा	10	ह़सरत व यास की इन्तिहा	35
क्या सदक़े से माल में कमी होती है?	13	इख़्लास कहां है?	38
सदक़ा किसे कहते हैं?	14	इख़्लास की पहचान	39
सदक़े की मुख़्तलिफ़ सूरतें	15	इख़्लास की बरकतें	40
हुरूफ़े सदक़ा के 4 मदनी फूल	16	माल एक आज़माइश है	42
"बरकते सदक़ात" के नव हुरूफ़ की		सदक़े में कौन सा माल दिया जाए?	46
निस्बत से सदक़ा व ख़ैरात के फ़ज़ाइल		सदक़ा अ़लानिय्या देना अफ़्ज़ल है या छुपा कर?	49
पर मब्नी 9 फ़रामीने मुस्त़फ़ा	17	इज़्हार या इख़्फ़ा का मदार निय्यत पर है	50
जन्नत में घर की ज़मानत	19	अ़लानिय्या सदक़ा देने की ममनूअ़ सूरत	52
4 दिरहमों के बदले चार दुआ़एं	21	नज़राना देने का अन्दाज़	53
इन्सान की हलाकत	23	सदक़ा किसे देना अफ़्ज़ल है?	53
माली इ़बादत की क़बूलिय्यत	24	माख़ज़ो मराजेअ़	58
एह़तिरामे मुस्लिम	26	फ़ेहरिस्त	60

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

याद दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।)

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

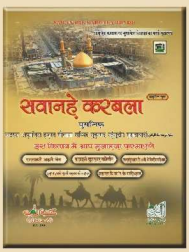

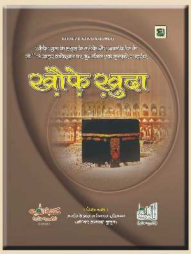

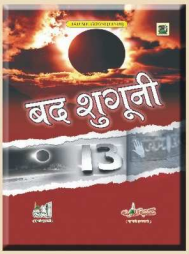

ISBN 978-969-579-772-3
0109724

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID
DELHI - 110006, PH : 011-23284560
email : maktabadelhi@gmail.com
web : www.dawateislami.net